राजा राममोहन राय सामाजिक एवं धार्मिक सुधार

हमारे देश की सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था, प्राचीन धार्मिक परंपराओं तथा नैतिक आदर्शों पर आधारित रही है। इस सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था में समय-समय पर अनेक दोष उत्पन्न होते रहे हैं और उसका वास्तविक रूप विकृत होता रहा है। ऐसे वातावरण में राजा राममोहन राय ने लोगों में अपने धर्म एवं राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रति चेतना उत्पन्न की। इसके साथ ही उन्होंने अनेक सामाजिक और धार्मिक सुधार भी किए। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने राजा राममोहन के संबंध में लिखा है, "उन्होंने भारत में नए युग का सूत्रपात किया। वस्तुतः वे आधुनिक भारत के जनक थे।"

सामाजिक सुधार के कार्यक्रम :- राजा राममोहन राय ने बहु-विवाह, बाल-विवाह, जाति-प्रथा, पर्दा-प्रथा एवं निरर्थक कर्मकांडों आदि का डटकर विरोध किया। उन्होंने विधवा-विवाह निषेध प्रथा का भी जोर विरोध किया और सब क्षेत्रों में स्त्रियों की समानता का प्रबल समर्थन किया। उन्होंने सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में अनेक सुधार किए, जिसके परिणामस्वरूप भारतीयों में राजनीतिक चेतना उत्पन्न हुई और उन्हें अपने देश और धर्म की स्वतंत्रता का ध्यान खींचा (आया)। राजा राममोहन राय ने धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों के लिए 1828 ई० में ब्रह्म समाज की स्थापना की जिसके द्वार सभी वर्गों के लिए निष्पक्ष रूप से खुले थे। कुमारी कोलेट ने राजा राममोहन के बारे में लिखा है, "राजा राममोहन राय एक महान सेतु के समान हैं, जिससे होकर भारत अपने सुदूर अतीत से अदृश्य भविष्य की ओर बढ़ रहा है।" इस प्रकार राजा राममोहन राय नवनिर्माण युग का प्रवर्तक, भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन के के पिता और भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत थे।

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept. of History; S.B. College, Ara
B.A.- Part iii ; Paper Vi
History of India (1765-1950)
21.02.2024
Class- 02.(Second)
Mob: 8809947478
Email Id: ukraisasaram@gmail.Com